

AJMER AND NAYA BAZAAR

'Ajayameru' or Ajmer, the hill town perceived by Ajaipal Chauhan in 7th century CE is known for its age old saga of historical and cultural narratives. By the first quarter of 14th century CE, the region became an unsettled point of dispute between the Sultans of Delhi, Ranas of Mewar, the Rathores of Marwar and the Sultans of Gujrat. In the latter half of 16th century CE, the region became the base for Mughal operations in Rajputana. Later, the city went under the rule of Marathas and finally to the British.

Owing to its strategic location between the cultural regions of Marwar and Mewar, and its proximity to Delhi, the city of Ajmer is notable for its multifaceted layering of urban fabric. The city is a home to the shrine of the Sufi Saint Khwaja Moinuddin Chisti who introduced the Chisti order of Sufism in Indian subcontinent. Architecturally, the city of Ajmer displays an amalgamation of Hindu and Islamic styles, and Naya bazaar represents the complete story of Ajmer woven together with political establishments and Sufism beginning from the Rajputs to the Mughals and Marathas.

Naya Bazaar was envisioned by Sivaji Nana, the Maratha Governor of Ajmer in 1797 CE to setup up a market area. The area reflects a somber blend of cultural and religious coexistence, intangible heritage in the form of traditional ittar (perfume), lace making, and exotic delicacies. The heritage walk is visualized to taste the dialogic fusion of artistic and innovational fervor of the bygone eras. The 1.8 km walk largely focuses on the tangible and intangible assets and starts from the Akbari Quila built during the Mughal period and leads towards the historic buildings such as Gole Piau, Badshahi Building, Lodha Haveli, Ghee Mandi Gate, Char Bhuj temple, Chhota Ghara temple, Narsingh temple, Satyanarayan Temple, Luniya Haveli, Daddo ki Haveli. The walk ends at Soniji ki Nasiyan, an exquisite Jain temple after passing through the lanes of Naya Bazaar that mark a valuable repository of cultural properties and historic spaces which display magnificent vernacular architecture.

HRIDAY

Rejuvenating the Soul of Urban India



सत्यमेव जयते

Ministry of Urban Development
Government of India



**LOCAL SELF GOVERNMENT DEPARTMENT
GOVERNMENT OF RAJASTHAN**

**AJMER MUNICIPAL
CORPORATION**

Walk Designed by



Development and Research Organisation for Nature, Arts and Heritage

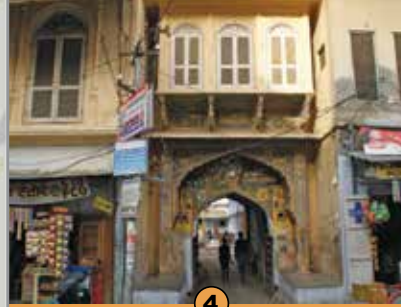
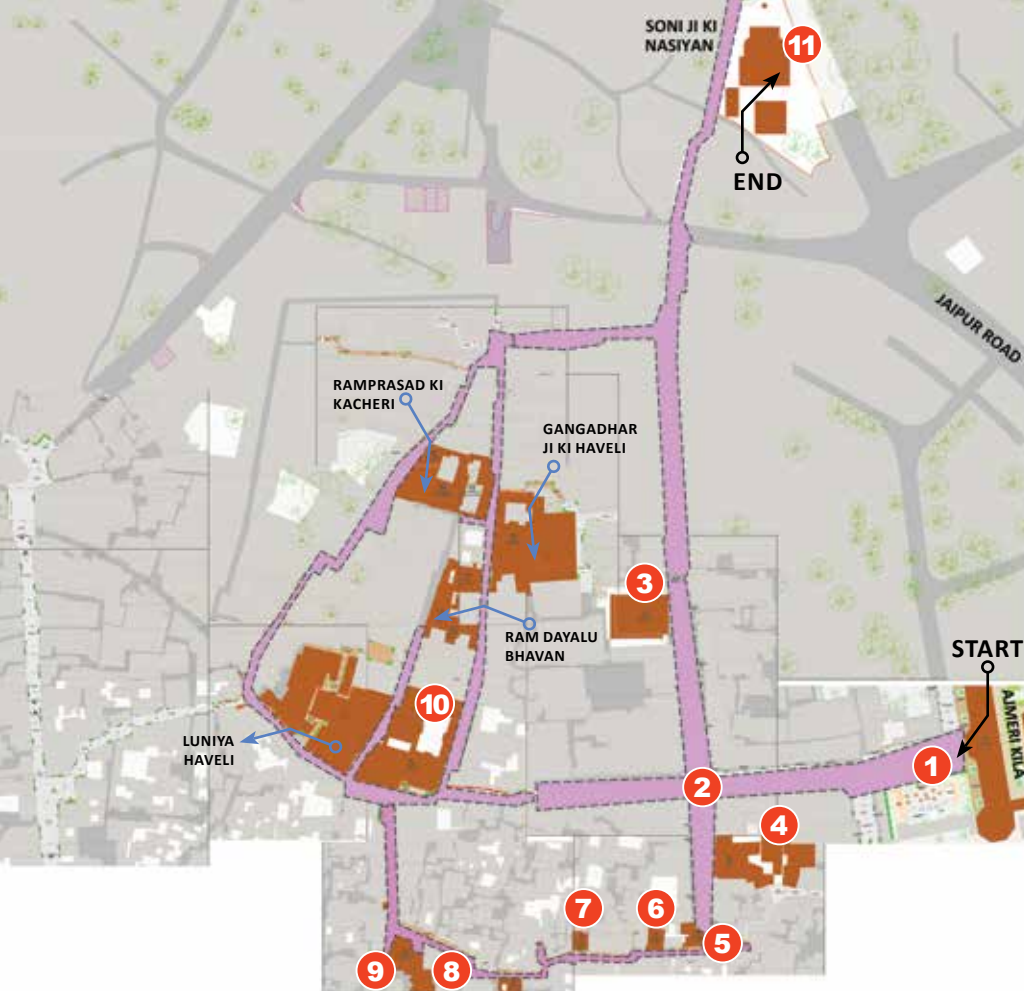
A-258, South City-I, Gurgaon-122 001

Phone: 91-(0)124-4082081, 2381067, Fax: 91-(0)124-4269081

Email: dronah@gmail.com, Website: www.dronah.org

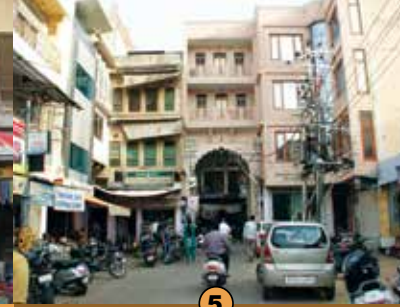
NAYA BAZAAR HERITAGE WALK AJMER





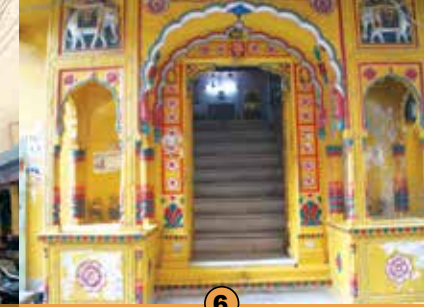
LODHA HAVELI

Traditionally a residential property, it was built in 19th century CE by the rich noble of Ajmer. The exquisite feature of the building is the profusely painted gateway and possesses multi-courts.



GHEE MANDI GATE

Built in 16th century CE, the Ghee Mandi gate is oriented north-south. The multi-foliated arched gateway is beautifully decorated with medallion, though much of lustrous fabric is now lost.



CHAR BHUJA TEMPLE

Constructed in the 16th century CE, the double-storied temple dedicated to Chaturbhuj Nath, an incarnation of Lord Krishna is entered through a multi-foliated arched gateway to a series of steps that lead to the *ardhamandapa* of the temple.



CHOTA GHARA TEMPLE

A typical Haveli kind of a Digambar Jain temple, it's double-storied and belongs to 18th century CE. On plan, the temple has a *ardhamandapa* that gives a view of the *garbhagriha*.



SATYANARAYAN TEMPLE

The ornate temple gives a glimpse of Mughal-Rajput artistic influence. The temple dedicated to Satyanarayan, a manifestation of Lord Vishnu is entered through a multi-foliated gateway that leads to the *ardhamandapa*.



NARSINGH TEMPLE

A solemn blend of Mughal-Rajput style, the temple dedicated to Narsimha avatar of Vishnu comprises of a multi-foliated archway that opens into *ardhamandapa* and a series of cells.



AJMERI KILA

Located in the heart of the city in Naya Bazaar, the Ajmeri Kila (historically known as Akbari Kila) is a splendid fusion of Marwar and Islamic architecture. As a prominent symbol of Islamic supremacy, it was constructed in 1570 CE to pay homage to Khwaja Moinuddin Chisti.



GOLE PIAU

Constructed in 19th century CE by the Seths of Ajmer, this cylindrical ornate building is used as a source of water, and in the present time is owned and managed by the Cloth Merchant's Association.



BADSHAHI BUILDING

Closely linked with the Ajmer Fort, the Badshahi Building was built on the orders of Akbar to house his servants and other employees. Built in sandstone, the building has a pillared hall beautifully decorated with bracketed colonnades and an inner chamber.



DADDO KI HAVELI

Fashioned in Indo-Persian style, the residential building was built in 19th century CE by the famous Patwas to host barat of their daughter. The five court haveli is beautifully decorated with jalis, jharokas and floral patterns.



SONJI KI NASIYAN

Built in the 19th century, Sonji ki Nasayan is architecturally a rich Jain temple. The main chamber is known as the 'Swarana Nagari', and comprises gold-plated wooden Jain idols. The ornate temple in the present time is partly a museum.

OTHER PLACES OF INTEREST

- The 18th century Maratha havelis, Dakshinawada and Gajmal Ji ki haveli.
- A noteworthy place to visit is a Jain temple nearby Bhagchand Soni which has beautiful glass inlay work.

अजमेर और नया बाजार

‘अजयमेरु’ या अजमेर, पहाड़ी नगरी जिसकी स्थापना अजयपाल चौहान ने 7 वीं सदी में की थी। जो अपने प्राचीन ऐतिहासिक वैभव और सांस्कृतिक आख्यानों के लिए प्रसिद्ध है। 14 वीं सदी के प्रथम पूर्वार्ध तक, यह क्षेत्र दिल्ली सुल्तान मेवाड़ के राणा मारवाड़ के राठोड़ तथा गुजरात के सुल्तान के बीच विवाद का विषय बन चुका था। 16वीं सदी के उत्तरार्ध में, यह क्षेत्र राजपूताना में मुगलों की कार्यवाही का आधार बन चुका था। कालान्तर में यह नगर मराठों और उसके बाद अंग्रेजों के अधीन रहा।

मारवाड़ और मेवाड़ के सांस्कृतिक क्षेत्रों के मध्य अपनी रणनीतिक स्थान के कारण, तथा दिल्ली से अपनी निकटता के कारण, अजमेर अपनी शहरी शानो शौकत की अपनी बहुमुखी प्रस्तर के लिए प्रसिद्ध है। यह नगर प्रसिद्ध सूफी संत ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती के दरगाह के लिए प्रसिद्ध है। जिन्होंने भारतीय उपमहाद्वीपों ने सूफी संत के चिश्ती संप्रदाय की नींव रखी थी। वास्तुशिल्प की दृष्टि से, अजमेर हिन्दू और इस्लाम दोनों शैलियों का मिश्रण प्रदर्शित करता है। और नया बाजार राजपूतों से लेकर मुगलों तथा मराठों तक के राजनीतिक संस्थानों से लेकर सूफीमत द्वारा बुने गए अजमेर की पूर्ण कहानी प्रस्तुत करता है।

नया बाजार की परिकल्पना शिवाजी नाना अजमेर के मराठा गवर्नर द्वारा सन 1797 ईस्वी में एक बाजार स्थापित करने के उद्देश्य की गई थी। यह क्षेत्र सांस्कृतिक और धार्मिक सह-अस्तित्व परम्पारिक इत्र के रूप में अविच्छन्न विरासतों, फीता निर्माण तथा लजीज व्यंजनों का अनूठा उदहारण प्रस्तुत करता है विरासतों के भ्रमण की परिकल्पना प्राचीन काल के कलात्मक फ्यूजन और नवीनतम सृजनों के मध्य सार्थक संवाद स्थापित करने के उद्देश्य से की गई थी। 1.8 किमी लंबी यात्रा मुख्य रूप से चल और अचल परिसंपत्तियों पर केन्द्रित रहती है, जिसकी शुरुआत मुगल काल में निर्मित अकबरी किला से होती है। और जो धीरे धीरे अन्य ऐतिहासिक इमारतों जैसे कि गोल गोले पिआउ, बादशाही बिल्डिंग, लोढ़ा हवेली, घी मंडी गेट, चार भुजा वाला मंदिर, छोटा धारा मंदिर मंदिर, नरसिंह मंदिर, सत्यनारायण मंदिर, लुनिया हवेली, ददोकी हवेली की ओर बढ़ती जाती है। यात्रा का समापन नया बाजार की गलियों से गुजरते हुए सोनीजी की नसिया पर होता है, जो एक भव्य मंदिर है नया बाजार वास्तव में सांस्कृतिक संपत्तियों और ऐतिहासिक प्रभावशाली देशी वास्तुशिल्प की झलक दिखलाती है।

HRIDAY
Rejuvenating the Soul of Urban India



सत्यमेव जयते

Ministry of Urban Development
Government of India



स्थानीय स्वशासन विभाग,
राजस्थान सरकार

अजमेर नगरपालिका

Walk Designed by



Development and Research Organisation for Nature, Arts and Heritage

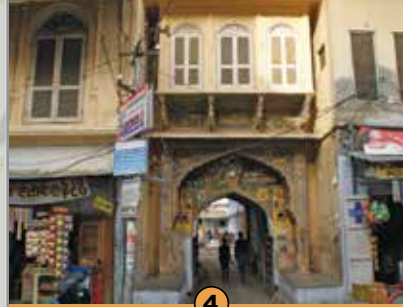
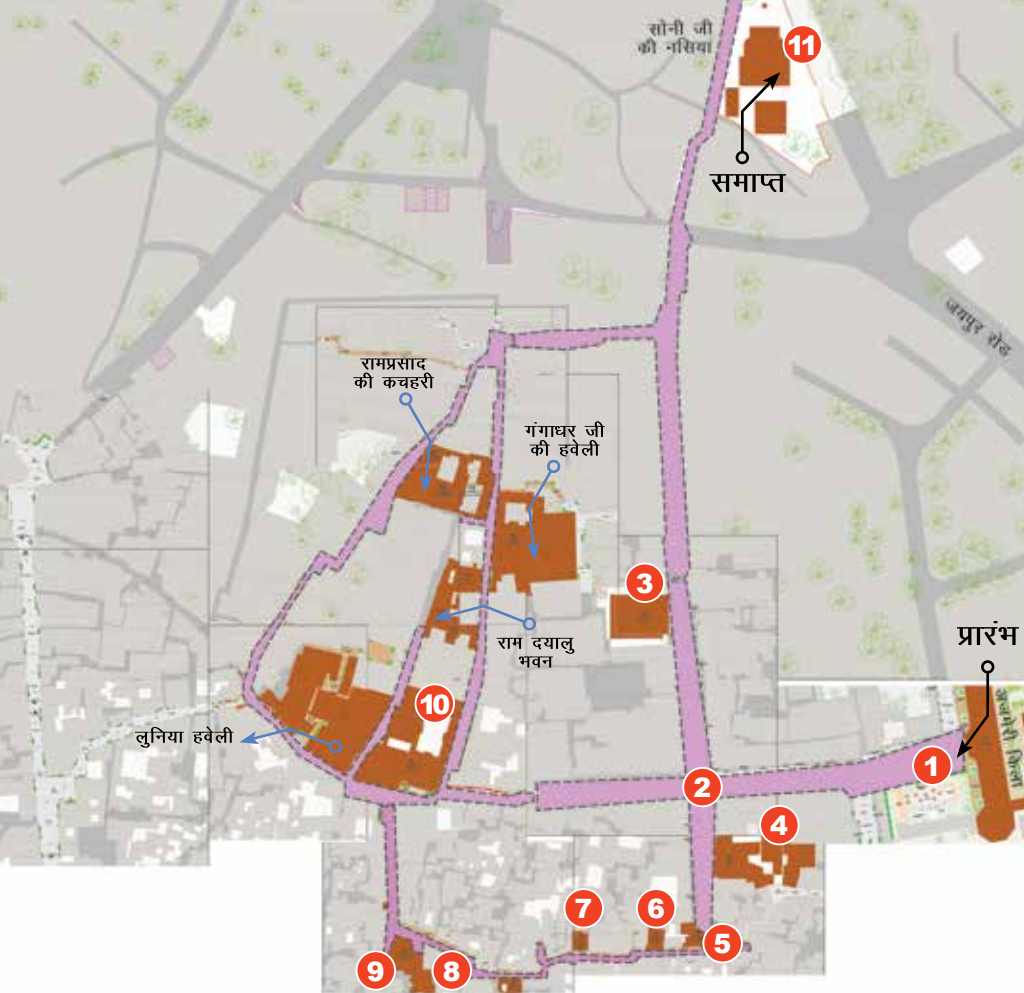
ए-258, साउथ सिटी-1, गुडगाँव-122 001

फोन: 91-(0)124-4082081, 2381067, फ़ैक्स: 91-(0)124-4269081

ईमेल: dronah@gmail.com, वेबसाइट: www.dronah.org

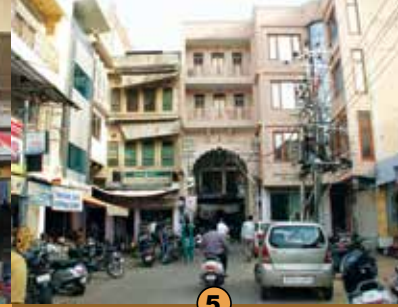
नया बाजार हेरिटेज वॉक अजमेर





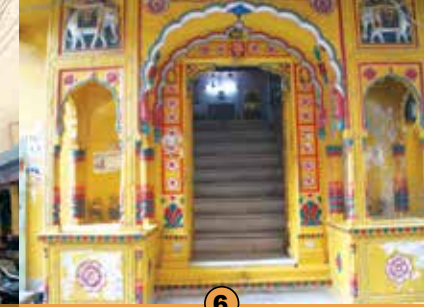
लोथा हवेली

परंपरागत रूप से एक आवासीय संपत्ति, इसका निर्माण अजमेर के रईस कुलीनों द्वारा 19वीं सदी में करवाया गया था। इस भवन की अद्वितीय विशेषता इसका अत्यधिक अलंकृत प्रवेशद्वार है और इसमें अनेकों — प्रांगण हैं।



धी मंडी गेट

16वीं सदी में निर्मित, धी मंडी गेट का मुख उत्तर दक्षिण दिशा में स्थित है। बहु बेलबूटेदार धनुषाकार प्रवेश द्वार को प्राचीन पदक से अलंकृत किया गया है हालाँकि वर्तमान में अधिकांश मनोहारी कलाकृतियों नष्ट हो चुकी हैं।



चार भुजा वाला मंदिर

16वीं सदी में निर्मित, दो मंजिला मंदिर में प्रवेश करने के लिए सीढ़ियों की श्रृंखला एक बहु-बेलबूटेदार धनुषाकार के प्रवेश द्वार से होकर गुजरना पड़ता है उसके बाद मंदिर के अर्द्धमंडप में प्रवेश किया जा सकता है।



छोटा धारा मंदिर

एक विशिष्ट प्रकार के हवेली के सामान्य मंदिर, यह एक दो मंजिला मंदिर है और इसका निर्माण 18वीं सदी में किया गया था। योजना के अनुसार, मंदिर एक अर्द्ध मंडप है जहाँ से गर्भगृह का एक दृश्य दिखाई देता है।



सत्यनारायण मंदिर

अलंकृत मंदिर मुगल-राजपूत के कलात्मक प्रभाव की एक झलक प्रस्तुत करता है। मंदिर में एक बहु बेलबूटेदार प्रवेश द्वार जो अर्द्ध मंडप की ओर जाता है और उसके माध्यम से प्रवेश किया जा सकता है।



नरसिंह मंदिर

मुगल-राजपूत शैली का एक पवित्र स्थान होने के कारण, मंदिर उम्र एक बहु बेलबूटेदार मेहराब शामिल है जो एक अर्द्ध मंडप और खण्डों की एक श्रृंखला में खुलती है।



अजमेरी किला

नये बाजार के मध्य में स्थित, अजमेरी किला मारवाड़ और इस्लामिक वास्तुशिल्प का अनूठा संगम है। इस्लामिक सरवोच्च के एक सर्वश्रेष्ठ चिह्न के रूप में इस किले का निर्माण सन 1570 ईस्वी में ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की यादगार के साथ —साथ राजपूत राजाओं के लिए मुगल शक्ति को स्पष्ट रूप व्यक्त करने के लिए किया गया है।

गोले पाऊ

अजमेर के संतों द्वारा सन 19 वीं सदी में निर्मित यह बेलनाकार अलंकृत इमारत का उपयोग एक जलस्रोत के रूप में किया जाता है, और वर्तमान समय में इसके अधिपत्य और रखरखाव की जिम्मेदारी क्लॉथ मर्चेन्ट्स एसोसिएशन के पास है।

बादशाही भवन

अजमेरी किला से निकटता से जुड़े बादशाही भवन का निर्माण अकबर के आदेश से उसके नौकरों और अन्य को आवासीय सुविधा प्रदान करने के उद्देश्य से करवाया गया था। बालुई पत्थर में निर्मित, इस इमारत में स्तंभ युक्त हॉल है जिसका कालनाड कोष्ठयुक्त तथा आंतरिक प्रकोष्ठ से लैस है।

दड़ की हवेली

इंडो-पर्सियन शैली के आवासीय इमारत को प्रसिद्ध पेटोईस द्वारा 19 वीं सदी में अपनी बेटी की बारात की मेजबानी के लिए बनाया था। पांच प्रांगणों की हवेली को खूबसूरती से जलीस, झरौला और पुष्प पैटर्न के साथ सजाया गया था।

सोनीजी की नसिया

19 वीं सदी में निर्मित, सोनीजी की नसिया वास्तुशास्त्र की दृष्टि से एक समृद्ध जैन मंदिर है। इसके मुख्य कक्ष को 'वरनानगर' के रूप में जाना जाता है, और इसमें सोना चढ़ाया गया लकड़ी की जैन मूर्तियां शामिल हैं। वर्तमान समय में अलंकृत मंदिर का आंशिक रूप संग्रहालय में संरक्षित है।

रुचि के अन्य स्थान

- 18वीं शताब्दी की मराठा हवेलीज, दक्षिणावाड़ा और गजमल जी की हवेली
- भागचंद सोनी के निकट जैन मन्दिर जिसमें सुंदर कांच का सजावटी काम किया गया है, देखनयोग्य महत्वपूर्ण

स्थान है।